## ''आचार्य तुलसी दूरदृष्टा, भविष्य दृष्टा और गंभीर चिंतन की प्रतिमूर्ति थे''

**- आचार्यश्री महाप्रज्ञ**

**बीदासर, 22 अप्रैल।**

आचार्यश्री ने फरमाया कि साधना का पहला सूत्र है अहिंसा और साधना का अंतिम सूत्र भी अहिंसा है। जिस तरह से नदी के पानी को रोकने के लिए सेतु की जरूरत होती है वैसे ही अहिंसा को स्थिर रखने के लिए सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह रूपी सेतु आवश्यक है। नाम, जप, उपवास करना अच्छा है किंतु उसके साथ अहिंसा की गहराई भी व्यक्ति के भीतर होनी चाहिए।

उक्त विचार आचार्यप्रवर ने तेरापंथ भवन श्रीमद् मघवा समवसरण में धर्मसभा को संबोधित करते फरमाये।

आचार्यप्रवर ने समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी के संसारपक्षीय माताजी के स्वर्गासपरांत आए डागा परिवार को संबल प्रदान करते हुए फरमाया कि आचार्य तुलसी दूरदृष्टा भविष्य दृष्टा और गंभीर चिंतन की प्रतिमूर्ति जैसी उन्होंने कल्पनाएं की कि आने वाले युग में क्या-क्या होने वाला है और क्या करना चाहिए यह चिंतन उनके मस्तिष्क में हमेशा रहता था। युग बदलता रहता है कहीं भी ऐसा नहीं हुआ युग के रथ को रोका गया हो। हम कैसे बदल सकें, कैसे समीचीन हो सकें उस चिंतन में समण श्रेणी की कल्पना आई। उसमें समणी मधुरप्रज्ञा के माता-पिता से काफी बातचीत होती थी। इनके संसारपक्षीय माताजी का स्वर्गवास अंतिम समय में धार्मिक वातावरण में हुआ। मैं मानता हूं कि जिस व्यक्ति का अंतिम समय बहुत सुंदर साधना में धार्मिक वातावरण में, साधना में बीतता तो मानना चाहिए कि उसे अच्छी गति मिलती है। ऐसी माता के प्रति जिसके जीवन में धर्म, गुरु के प्रति समर्पण था। अंतिम समय अनशनपूर्वक था। जीवन की कसौटी में जो खरा उतरता है वह अपने आप में महत्त्वपूर्ण होता है।

**युवाचार्यश्री महाश्रमणजी** ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि व्यक्ति को गुरु के साथ गंभीरतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए। शिश्य के लिए यह आवश्यक है कि गुरु के बिना पूछे बात नहीं करनी चाहिए। गुरु तुम्हें पूछे तो बात बता सकते हो।

उन्होंने आगे कहा कि अनेक लोग मौन का प्रयोग करते हैं। मौन एक साधना है, अनपेक्षित, झूठ बात आदमी को नहीं करनी चाहिए। झूठ बोलने से व्यक्ति की आत्मा कलुशित होती है।

युवाचार्य महाश्रमण ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चों को झूठ बोलने से बचते हुए क्रोध को, गुस्से को विफल करने का प्रयास करे। यदि गुस्सा आए तो मन को समझाने का प्रयास करना चाहिए अथवा दीर्घ श्वास (लंबा श्वास) का प्रयोग कर गुस्से को शांत किया जा सकता है।

इस अवसर पर समणी नियोजिकाजी मधुरप्रज्ञाजी ने अपनी संसारपक्षीय मां स्वर्गीय जमनादेवी डागा का उल्लेख करते हुए कहा कि मेरे संसारपक्षीय माता भावों में अच्छा जीवन जीती थी। वे कई नियमों जैसे रात्रि भोजन का त्याग, पानी का व्यर्थ दुरुपयोग नहीं करना आदि का पालन करती थी।

इस अवसर पर भीनासर (बीकानेर) का डागा परिवार के सप्तमण्डली ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

## कायोत्सर्ग से तनावों का संतुलन

**बीदासर, 22 अप्रैल।**

शरीर के विभिनन अंगों पर अनावश्यक दबाव से तनाव का सृजन होता है। तनाव से शारीरिक, मानसिक क्रियाओं में अवरोध पैदा होता है इससे संतुलन बिगड़ जाता है। भावात्मक तनाव अधिक खतरनाक होता हे। इससे व्यक्ति क्रूर और आक्रामक हो जाता हे। इन सबको दूर करने का सरल उपाय कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग से शरीर की चंचलता का परित्याग होता है। क्रिया और नकारात्मक सोच से तनाव पैदा होता है। शिथिलीकरण और सकारात्मक सोच से तनाव दूर होता है ये विचार प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल ने कर्णाटक से आये प्रशिक्षणार्थियों को प्रायोगिक अभ्यास कराते हुए व्यक्त किये। मुनि ने बताया तनाव वैश्विक समस्या बन गई है इससे रक्तचाप, मधुमेह, हृदयघात जैसी बीमारियां उत्पन्न होने लगती है। प्रतिदिन 15 मिनट का कायोत्सर्ग शरीर, मन और भावों को निर्मल बना देता है। पांच मिनट प्रेक्षाध्यान व्यक्ति के मस्तिष्क को शान्त और तटस्थ बना देता हे। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने भावनात्मक तनावों के संतुलन पर विस्तार से चर्चा की। समणी संबोधप्रज्ञा बौद्धिक क्षमता को विकसित करने के विभिन्न प्रयोग कराये।

---

## युवाचार्य महाश्रमण का भावपूर्ण अभिनन्दन व भामाशाहों का सम्मान समारोह

**बीदासर, 22 अप्रैल।**

स्थानीय ओसवाल श्रीसंघ पंचायत भवन में गुरुवार को सायं 4 बजे युवाचार्य महाश्रमण के पधारने पर ओसवाल श्रीसंघ पंचायत की ओर से भावपूर्ण अभिनन्दन किया जायेगा। पंचायत के सरपंच चौथमल बोथरा ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि इसके पश्चात रात्रि 8 बजे युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में पंचायत भवन व भूमि के विकास के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले दानदाताओं का सम्मान किया जायेगा।

---